❁ 12 सितम्बर 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❁

✺ ज्ञान-

1] बोलो, हम राजयोग सिखाते हैं, जिससे तुम मनुष्य से देवता अर्थात् राजा बन सकते हो और कोई सतसंग ऐसा नहीं होगा जो कहे हम मनुष्य से देवता बनने की शिक्षा देते हैं। देवतायें होते हैं सतयुग में। कलियुग में हैं मनुष्य। अब हम तुमको सारे सृष्टि चक्र का राज़ समझाते हैं, जिससे तुम चक्रवर्ती राजा बन जायेंगे और फिर तुमको पावन बनने की बहुत अच्छी युक्ति बताते हैं। ऐसी युक्ति कभी कोई समझा न सके। यह है सहज राजयोग। बाप है पतित-पावन।

2] यह ज्ञान मार्ग है। ज्ञान सागर एक ही बाप होता है। ज्ञान और भक्ति अलग-अलग है। ज्ञान सिखाने लिए बाप को आना पड़ता है क्योंकि वही ज्ञान का सागर है। वह खुद आकर अपना परिचय देते हैं कि मैं सबका बाप हूँ। ब्रह्मा द्वारा सारी सृष्टि को पावन बनाता हूँ। पावन दुनिया है सतयुग। पतित दुनिया है कलियुग। तो सतयुग आदि, कलियुग अन्त का यह है संगमयुग। इनको लीप युग कहा जाता है।

3] ज्ञान नहीं है तो बुद्धि मित्र-सम्बन्धियों के तरफ भटकती रहती है। यहाँ तो बाप कहते हैं और सब कुछ भूल जाना है। पिछाड़ी में कुछ भी याद न आये। बाबा ने सन्यासियों आदि को देखा हुआ है जो पक्के ब्रह्म ज्ञानी होते हैं, सवेरे एषसे बैठे-बैठे ब्रह्म महततत्व को याद करते-करते शरीर छोड़ देते हैं। उनके शान्ति का प्रवाह बहुत होता है। अब वह ब्रह्म में लीन तो हो न सकें। फिर भी माता के गर्भ से जन्म लेना पड़ता है।

4] बाप ने समझाया है वास्तव में महात्मा तो कृष्ण को कहा जाता है। मनुष्य तो बिगर अर्थ समझे ऐसे ही कह देते है। बाप समझाते हैं श्रीकृष्ण है सम्पूर्ण निर्विकारी, परन्तु उनको सन्यासी नहीं, देवता कहा जाता है। सन्यासी कहना वा देवता कहना उनका भी अर्थ है। यह देवता कैसे बना? सन्यासी से देवता बना। बेहद का सन्यास किया फिर चले गये नई दुनिया में।

5] बाप घड़ी-घड़ी कहते मनमनाभव।..... वास्तव में उसका अर्थ लिखा हुआ भी है अपने को आत्मा समझ, देह के सब धर्म छोड़ मामेकम् याद करो। भगवानुवाच है ना। परन्तु उनकी बुद्धि में है कृष्ण भगवान। वह तो देहधारी पुनर्जन्म में आने वाला है ना। उनको भगवान कैसे कह सकते हैं।

6] सतयुग में था प्रवृत्ति मार्ग का धर्म। देवतायें निर्विकारी थे वही पुनर्जन्म लेते-लेते पतित बनते हैं।

7] बाप कहते हैं मैं इसमें आता हूँ तो भी मेरा नाम शिव ही है। मैं इस रथ द्वारा तुमको नॉलेज देता हूँ, इनको एडाप्ट किया है। इनका नाम रखा है प्रजापिता ब्रह्मा। इनको भी मेरे से वर्सा मिलता है।

✺ योग-

1] वह सर्वशक्तिमान भी है तो उनको याद करने से ही पाप भस्म होंगे क्योंकि योग अग्नि है ना। तो यहाँ नई बात सिखलाते हैं।

2] अब तुम बच्चों को बाप को याद कर पवित्र जरूर बनना है। इस योग अग्नि से विकर्म विनाश होंगे। यह भी निश्चय है- बेहद के बाप से बेहद का वर्सा हम कल्प-कल्प लेते हैं। अब फिर स्वर्गवासी बनने के लिए बाप ने कहा है कि मामेकम् याद करो क्योंकि मैं ही पतित-पावन हूँ। तुमने बाप को पुकारा है ना, तो अब बाप आये हैं पावन बनाने। पावन होते हैं देवता, पतित होते हैं मनुष्य। पावन बनकर फिर शान्तिधाम में जाना है।

3] अब बाप कहते हैं निर्विकारी बनना है। स्वर्ग में चलना है तो मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जायें, पुण्य आत्मा बन जायेंगे फिर शान्तिधाम-सुधधाम में जायेंगे। वहाँ शान्ति भी थी, सुख भी था। अभी है दु:खधाम। फिर बाप आकर सुखधाम की स्थापना करते हैं, दु:खधाम का विनाश।

...2

4] एक को याद करना- वह है अव्यभिचारी याद। शरीर को भी भूल जाना है। शान्तिधाम से आये हैं फिर शान्तिधाम में जाना है। वहाँ पतित कोई जा न सके। बाप को याद करते-करते पावन बन तुम मुक्तिधाम में चले जायेंगे।

✹ धारणा-

1] शुरूड बुद्धि तो अच्छी रीति से धारण कर औरों को सुनाने का शौक रखते हैं।

2] जो जितना पुरूषार्थ करेंगे उतना ऊंच पद पायेंगे। अपने को आत्मा निश्चय करना है। भल गृहस्थ व्यवहार में रहो। उसमें भी जितना हो सके उठते-बैठते यह पक्का करो, जैसे भक्त लोग सवेरे उठकर एकान्त में बैठे माला जपते हैं, तुम तो सारे दिन का हिसाब निकालते हो।

3] बाप कहते हैं पहले-पहले तो यह पक्का निश्चय करो कि हम आत्मा हैं, शरीर नहीं। बाप ने हमको एडाप्ट किया है, हम एडाप्टेड बच्चे हैं। तुमको समझाया जाता है बाप ज्ञान का सागर आया है और सृष्टि चक्र का राज़ समझाते हैं। दूसरा कोई समझा न सके। बाप कहते हैं देह सहित देह के सब धर्मों को भूल मामेकम् याद करो। सतोप्रधान जरूर बनना पड़ेगा। यह भी जानते हो पुरानी दुनिया का विनाश तो होना ही है।

4] कई बच्चे कहते हैं कि हम राइट हैं फिर भी हमें ही सहन करना पड़ता है, मरना पड़ता है लेकिन यह सहन करना वा मरना ही धारणा की सबजेक्ट में नम्बर लेना है, इसलिए सहन करने में घबराओ नहीं। कई बच्चे सहन करते हैं लेकिन मजबूरी से सहन करना और मोहब्बत में सहन करना - इसमें अन्तर है। बातों के कारण सहन नहीं करते हो लेकिन बाप की आज्ञा है सहनशील बनो। तो आज्ञा समझ मोहब्बत में सहन करना अर्थात् स्वयं को परिवर्तन कर लेना इसकी ही मार्क्स हैं।

✹ सेवा-

1] ---